20-8-05

# मज़लूमों की सेवा को धर्म मानते थे बाबू मूलचंद

पानीपत, 20 अगस्त (खर्ब) : हरियाणा के गांधी कहे जाने वाले प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन किसी भी बड़े से बड़े व्यक्ति तथा समाज के उच्च वर्ग की परवाह किए बगैर समाज में निचले स्तर का जीवन यापन करने वाले लोगों की सेवा को ही अपना धर्म मानते थे। समालखा विधानसभा क्षेत्र से ही बाबू मूलचंद जैन दो बार विधायक चुने गए। बाबू मूलचंद जैन का 91वां जन्मदिवस 21 अगस्त को उनके पैतृक गांव सिकंदरपुर माजरा में मनाया जाएगा। इस समारोह के सभापति व वृद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं पूर्व मंत्री चौ. रणबीर सिंह हुड्डा होंगे तथा मुख्य अतिथि प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री करतार देवी होंगी।

20 अगस्त 1915 को गांव सिकंदरपुर माजरा तहसील गोहाना जिला सोनीपत में जन्मे बाबू मूलचंद की कर्मस्थली पूरा राज्य विशेष रूप से पानीपत ही रहा। उन्होंने गांव के स्कूल से ही 1925 में प्राथमिक शिक्षा ली तथा 1931 में गोहाना के हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की। उसी वर्ष मार्च में सरदार भगत सिंह, सुखदेव सिंह व राजगुरु को फांसी दी गई। इसके विरोध में पूरे देश में कोहराम मच गया। उसी दौरान गोहाना में जो विरोध जलसे व जलूस हुए, उनमें बाबू मूलचंद ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

उन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी तथा 1935 में लाहौर से बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की और पंजाब में प्रथम आने पर गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। सन 1937 में रोहतक के असोंधा गांव में कांग्रेस की ससभा पर जमीदारा लीग के हजारों कार्यकर्त्ताओं ने हमला बोलकर कांग्रेस के अनेक कार्यकर्त्ताओं को घायल कर दिया था जिनमें बाबू जी भी एक थे। सन 1940 में गांधी जी के सत्याग्रह आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया। 6 मार्च 1941 को बाबू जी ने अपनी जन्मभूमि गांव सिकंदरपुर माजरा से ही सत्याग्रह शुरू कर दिया। इस पर पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार करके जेल भेज दिया और उन्होंने एक साल की सजा गुजरावाला (अब पाकिस्तान) में काटी। वर्ष 1942 में गांधी जी द्वारा छेड़े गए भारत छोड़ो आंदोलन में बाबू जी के भाग लेने पर 11 अगस्त को उन्हें करनाल कचहरी से गिरफ्तार कर लिया गया तथा नजरबंद करके करनाल जेल में भेज दिया गया जहां उन्हें एक सप्ताह की सजा सुनाई गई।

स्वतंत्रता सेनानी बाबू मूलचंद जैन आरंभ से ही क्रांतिकारी विचारों के व्यक्ति थे। गांधी जी के विचारों व जैन धर्म शास्त्रों का उनके जीवन पर गहरा प्रभाव था। यही कारण था कि उन्हें छुआछूत से भारी नफरत ही नहीं थी बल्कि वे छुआछूत करने वाले व्यक्तियों से दूर ही रहना पसंद करते थे। यही कारण था कि कालेज शिक्षा के दौरान ही उन्होंने महसूस किया कि गांव के उच्च वर्ग के द्वारा दलितों को उच्च वर्ग के कुएं से पानी न भरने देना दलितों के साथ अन्याय है तो बाबू मूलचंद का खून खोल उठा और उन्होंने गांव में दलितों को उच्च वर्ग के कुएं से पानी भरने के लिए प्रेरित ही नहीं किया बल्कि उच्च वर्ग के विरोध के बावजूद कुएं से पानी भरवाकर ही दम लिया। हालांकि बाबू मूलचंद को इसके लिए उच्च वर्ग का विरोध झेलना पड़ा।

बाबू मूलचन्द जैन

**हरियाणा के गांधी कहे जाने वाले स्वतंत्रता सेनानी का जन्मदिवस समारोह आज**

आजादी के बाद बाबू मूलचंद ने करनाल कचहरी में वकालत आरंभ की। वह गरीबों व मुजारों की वकालत मुफ्त में करते थे। उन्होंने एक साप्ताहिक समाचार पत्र 'बलिदान' का भी संपादन किया। वह अपने लेखन में मुजारों को पांच-पांच एकड़ भूमि दिलवाने की बात कहते थे।

1952 में पहली बार बाबू मूलचंद जैन समालखा से विधायक बने। वर्ष 1957 में कैथल लोकसभा के सदस्य चुने गए। 1962 में घरौंडा से कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़ा, परंतु तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों से अंदरुनी विरोध के कारण चुनाव हार गए। पुन: 1967 में घरौंडा चुनाव लड़ा और विधायक बने। 1977 में समालखा से पुन: जनता पार्टी के टिकट पर विधायक बने। उन्होंने 1985 में राजीव लोंगोवाल समझौता की धारा 7 व 9 का विरोध किया।

बाबू मूलचंद जी ने अपने 77वें जन्मदिवस पर 20 अगस्त 1991 को अपने पैतृक निवास को एक आदर्श पुस्तकालय के रूप में परिवर्तित कर गांव व क्षेत्र के लोगों को समर्पित किया। तभी से हर वर्ष बाबू मूलचंद का जन्मदिन पुस्तकालय दिवस के रूप में हर वर्ष गांवके ही स्कूल में मनाया जाता है।

दूसरी तरफ कई स्वतंत्रता सेनानियों ने इस बात पर नाराजगी जाहिर की है कि हरियाणा सरकार अपने ही आदेशों की पालना नहीं कर रही जिसमें हरियाणा सरकार ने यह घोषित कर रखा है कि किसी भी स्वतंत्रता सेनानी के देहांत के बाद जिस गांव, कस्बे व नगर में वह स्वतंत्रता सेनानी रहता था, उस स्थान पर गली, सड़क, भवन या स्कूल का नाम उस स्वतंत्रता सेनानी के नाम पर रखा जाएगा। परंतु हरियाणा सरकार के यह आदेश जो सभी जिला उपायुक्तों को 22 अगस्त 1984 तथा 5 जुलाई 1985 में दिए गए, वे लागू नहीं होने से उपायुक्त कार्यालयों में ही पड़े धूल चाट रहे हैं।

**खुशहाल भारत का श्रेय राजीव को : राणा :** पानीपत(खर्ब) : हरियाणा प्रदेश युवा पंजाबी सभा के चेयरमैन एवं कांग्रेसी नेता राणा ओबराय ने दिवंगत प्रधानमंत्री राजीव गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज दुनिया में भारत की जो पहचान है, उसकी आधारशिला 1984 में भारत रत्न स्व. राजीव गांधी ने रखी थी। उन्होंने कहा कि भारत में पंचायती राज, कंप्यूटर युग एवं 18 साल के युवा को मत. डालने का अधिकार जैसे कार्य राजीव गांधी की देन है। उन्होंने कहा कि आज उन्नत और खुशहाल भारत का श्रेय सिर्फ दिवंगत राजीव गांधी को ही जाता है।

Downloaded from moolchandjain.org